

सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

Sanjai Kumar, Research Scholar, Department of Education,

Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

Dr. Sarvesh Yadav, Assistant Professor, Department of Education,

Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University

सार

प्रस्तुत शोध-पत्र सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि विद्यालय का प्रकार (सरकारी एवं निजी) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और उनके सामाजिक मूल्यों के विकास को किस सीमा तक प्रभावित करता है। वर्तमान समय में शिक्षा केवल परीक्षा परिणामों तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिकता, सहयोग, अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सहिष्णुता जैसे मूल्यों का विकास भी उतना ही आवश्यक है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध-डिजाइन को अपनाया गया है। नमूने में सरकारी तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया। शैक्षिक उपलब्धि का मापन परीक्षा अंकों के आधार पर तथा सामाजिक मूल्यों का आकलन प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। डाटा का विश्लेषण प्रतिशत विधि एवं तुलनात्मक विवेचन द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से यह संकेत मिलता है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः सरकारी विद्यालयों की तुलना में अधिक पाई गई, जबकि सामाजिक मूल्यों के स्तर में दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों में उल्लेखनीय अंतर नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक मूल्यों का विकास केवल विद्यालय के प्रकार पर निर्भर नहीं करता, बल्कि पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण की भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द (ज़मलूवतके)

शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक मूल्य, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय, माध्यमिक शिक्षा

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला होती है। यह न केवल व्यक्ति को ज्ञान एवं कौशल प्रदान करती है, बल्कि उसके व्यक्तित्व, व्यवहार एवं सामाजिक दृष्टिकोण का भी निर्माण करती है। वर्तमान युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों में सामाजिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास भी उतना ही आवश्यक हो गया है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर की शिक्षा वह चरण है, जहाँ विद्यार्थियों का मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास तीव्र गति से होता है।

भारत की शिक्षा प्रणाली में सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालय दोनों ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जहाँ सरकारी विद्यालय समानता एवं समावेशी शिक्षा के सिद्धांत पर कार्य करते हैं, वहीं निजी विद्यालय गुणवत्ता, प्रतिस्पर्धा एवं आधुनिक सुविधाओं पर अधिक

बल देते हैं। इन दोनों प्रकार के विद्यालयों की शैक्षिक संरचना, शिक्षण-पद्धति, संसाधन तथा वातावरण में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्यों पर पड़ता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक समाज में शैक्षिक उपलब्धि को सफलता का प्रमुख मानदंड माना जाता है, किंतु केवल उच्च अंक प्राप्त करना ही शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं है। विद्यार्थियों में अनुशासन, सहयोग, ईमानदारी, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहिष्णुता और नैतिकता जैसे सामाजिक मूल्यों का विकास भी अत्यंत आवश्यक है। इसी संदर्भ में यह अध्ययन सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे शिक्षा प्रणाली की वास्तविक स्थिति को समझा जा सके।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर विशेष बल दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप सरकारी विद्यालयों का व्यापक विस्तार हुआ। इन विद्यालयों का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित करना रहा है। दूसरी ओर, उदारीकरण एवं निजीकरण के पश्चात निजी विद्यालयों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई, जिन्होंने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुशासन एवं आधुनिक शिक्षण-सुविधाओं के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई।

वर्तमान समय में अभिभावकों के बीच यह धारणा प्रचलित हो गई है कि निजी विद्यालयों में शिक्षा का स्तर बेहतर होता है और वहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी अधिक सफल होते हैं। इसके विपरीत, सरकारी विद्यालयों को संसाधनों की कमी, शिक्षक अनुपस्थिति एवं शैक्षिक गुणवत्ता की समस्याओं से जोड़ा जाता है। किंतु यह धारणा पूर्णतः सत्य है या नहीं, इसका वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन आवश्यक है।

इसके साथ-साथ सामाजिक मूल्यों के ह्रास को लेकर भी चिंता व्यक्त की जा रही है। प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावाद एवं तकनीकी प्रभाव के कारण विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक संवेदनशीलता में कमी देखी जा रही है। ऐसे में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालय विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों के विकास में किस प्रकार योगदान दे रहे हैं।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करके शिक्षा व्यवस्था की वास्तविक स्थिति को उजागर करने का प्रयास करता है।

1.2 माध्यमिक शिक्षा का महत्व

माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थी जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। यह स्तर प्राथमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच सेतु का कार्य करता है। इस अवस्था में विद्यार्थी न केवल विषयगत ज्ञान अर्जित करते हैं, बल्कि उनके व्यक्तित्व, रुचियों, मूल्यों और भविष्य की दिशा का भी निर्धारण होता है।

माध्यमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में बौद्धिक क्षमता, तर्कशक्ति, निर्णय-क्षमता एवं सामाजिक समझ का विकास करना है। इसी स्तर पर विद्यार्थियों में नागरिक चेतना, राष्ट्रीय भावना, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों की नींव रखी जाती है। माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार के लिए तैयार करती है।

समाज के दृष्टिकोण से माध्यमिक शिक्षा का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यहीं से भविष्य के नागरिक, नेता, शिक्षक, वैज्ञानिक और प्रशासक तैयार होते हैं। यदि इस स्तर पर शिक्षा संतुलित न हो, तो समाज में असमानता, नैतिक पतन और सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। अतः माध्यमिक शिक्षा को केवल परीक्षा-उन्मुख न बनाकर मूल्य-आधारित एवं जीवनोपयोगी बनाना आवश्यक है।

1.3 शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य उस स्तर से है, जिसे विद्यार्थी किसी निश्चित समयावधि में अपने अध्ययन के माध्यम से प्राप्त करता है। इसे सामान्यतः परीक्षा अंकों, ग्रेड, श्रेणी अथवा शैक्षणिक प्रदर्शन के आधार पर मापा जाता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता, अध्ययन-अभ्यास, प्रेरणा, शिक्षण-पद्धति एवं शैक्षिक वातावरण का प्रतिफल होती है।

शैक्षिक उपलब्धि केवल स्मरण-शक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें समझ, विश्लेषण, अनुप्रयोग एवं सृजनात्मकता भी सम्मिलित होती है। विद्यालय का प्रकार, शिक्षक की गुणवत्ता, संसाधन, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं सामाजिक परिवेश शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं।

1.4 सामाजिक मूल्यों की अवधारणा

- सामाजिक मूल्य वे आदर्श एवं मान्यताएँ हैं, जो समाज में उचित व्यवहार का मार्गदर्शन करती हैं।
- ईमानदारी, सहयोग, सहिष्णुता, अनुशासन, समानता और सामाजिक उत्तरदायित्व प्रमुख सामाजिक मूल्य हैं।
- सामाजिक मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- विद्यालय सामाजिक मूल्यों के विकास का प्रमुख माध्यम होता है।
- सामाजिक मूल्यों के बिना शिक्षा अधूरी मानी जाती है।

1.5 सरकारी एवं निजी विद्यालयों की शैक्षिक विशेषताएँ

सरकारी विद्यालयों की विशेषताएँ:

- समान अवसर एवं समावेशी शिक्षा पर बल
- निःशुल्क या न्यूनतम शुल्क
- सामाजिक विविधता
- सरकारी पाठ्यक्रम एवं नीतियों का पालन

निजी विद्यालयों की विशेषताएँ:

- बेहतर भौतिक संसाधन एवं सुविधाएँ
- अनुशासन एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण
- आधुनिक शिक्षण-पद्धतियाँ
- अभिभावकों की अधिक सहभागिता

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
- दोनों प्रकार के विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
- शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- विद्यालय के प्रकार का विद्यार्थियों के समग्र विकास पर प्रभाव ज्ञात करना।

1.7 अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएँ

अध्ययन का क्षेत्र:

- यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है।
- अध्ययन में सरकारी एवं निजी विद्यालय दोनों को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन की सीमाएँ

- नमूना सीमित क्षेत्र से लिया गया है।
- डाटा विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित है।
- अध्ययन में केवल कुछ चयनित सामाजिक मूल्यों को ही शामिल किया गया है।

2 साहित्य समीक्षा

1. डॉ. रबीया रसूल खान (2021)

डॉ. रबीया रसूल खान ने अपने अध्ययन में सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण किया। यह अध्ययन जम्मू-कश्मीर के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर आधारित था। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई। शोधकर्ता के अनुसार इसका प्रमुख कारण निजी विद्यालयों में बेहतर शैक्षिक वातावरण, अनुशासन एवं संसाधनों की उपलब्धता है। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

2. डॉ. अजय कुमार शर्मा एवं डॉ. सुनीता वर्मा (2019)

डॉ. अजय कुमार शर्मा और डॉ. सुनीता वर्मा ने अपने शोध में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय के प्रकार के प्रभाव का अध्ययन किया। यह शोध मध्यप्रदेश के सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि के क्षेत्र में अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जबकि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक समायोजन एवं सहयोग की भावना अधिक पाई गई।

3. डॉ. रमेश चंद्र यादव (2018)

डॉ. रमेश चंद्र यादव ने अपने अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का विश्लेषण किया। शोध में यह पाया गया कि विद्यालय विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। अध्ययन के अनुसार सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक समानता, सहिष्णुता एवं सहयोग जैसे मूल्य अधिक विकसित पाए गए, जबकि निजी विद्यालयों में प्रतिस्पर्धात्मक भावना अधिक देखने को मिली।

4. डॉ. सीमा गुप्ता एवं डॉ. मनोज कुमार सिंह (2020)

डॉ. सीमा गुप्ता और डॉ. मनोज कुमार सिंह ने अपने शोध में सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों और शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का अध्ययन किया। शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि का सीधा संबंध केवल विद्यालय के प्रकार से नहीं है, बल्कि पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक वातावरण और शिक्षक-विद्यार्थी संबंध भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5. डॉ. प्रियंका मिश्रा (2022)

डॉ. प्रियंका मिश्रा ने अपने अध्ययन में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिकता और सहयोग की भावना अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जबकि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का स्तर अधिक था। यह अध्ययन दर्शाता है कि दोनों प्रकार के विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के अलग-अलग पक्षों को प्रभावित करते हैं।

3 शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का है। इसका उद्देश्य सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध में मात्रात्मक विधि अपनाई गई है तथा आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन में किसी भी प्रकार के सांख्यिकीय उपकरण या सॉफ्टवेयर का प्रयोग नहीं किया गया है।

3.1 शोध डिजाइन

इस शोध में वर्णनात्मक-तुलनात्मक शोध डिजाइन का प्रयोग किया गया है, क्योंकि इसमें दो प्रकार के विद्यालयों (सरकारी एवं निजी) के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्यों की तुलना की गई है।

3.2 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में चयनित क्षेत्र के सभी सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9वीं एवं 10वीं) के विद्यार्थी सम्मिलित हैं।

3.3 नमूना आकार एवं नमूना चयन

अध्ययन के लिए कुल 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया

- 50 विद्यार्थी रू सरकारी माध्यमिक विद्यालय
- 50 विद्यार्थी रू निजी माध्यमिक विद्यालय
- नमूना चयन हेतु सरल यादृच्छिक नमूना विधि (

3.4 डाटा संग्रहण के साधन

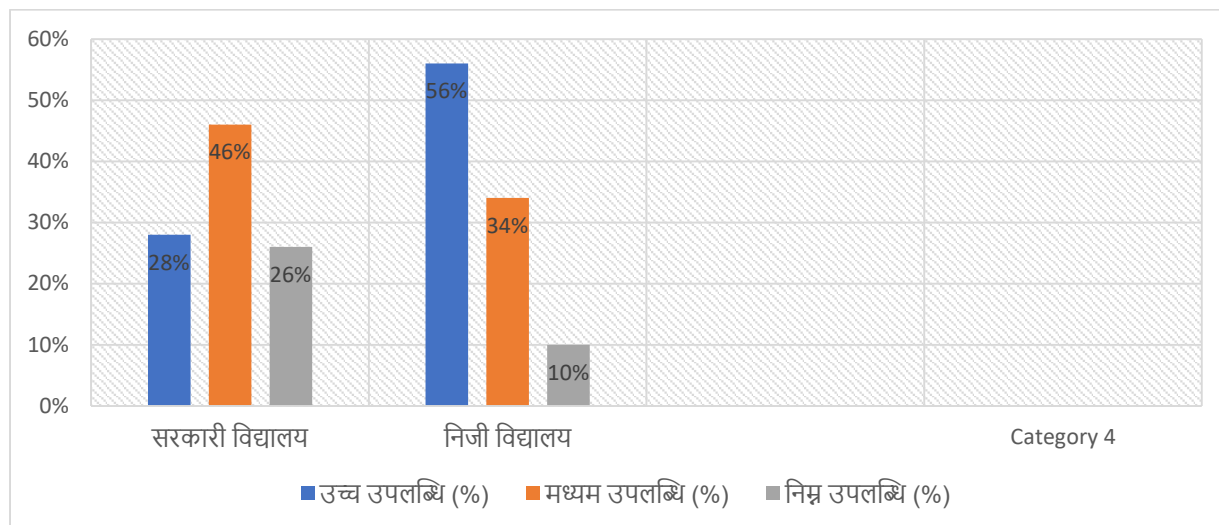
- शैक्षिक उपलब्धि – विद्यार्थियों के वार्षिक/अर्धवार्षिक परीक्षा अंकों के आधार पर
- सामाजिक मूल्य प्रश्नावली दृ सहयोग, अनुशासन, ईमानदारी, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सहिष्णुता से संबंधित कथन

4 डाटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका1 : शैक्षिक उपलब्धि का प्रतिशतात्मक वितरण

विद्यालय का प्रकार	उच्च उपलब्धि (%)	मध्यम उपलब्धि (%)	निम्न उपलब्धि (%)
सरकारी विद्यालय	28%	46%	26%

निजी विद्यालय	56%	34%	10%
---------------	-----	-----	-----

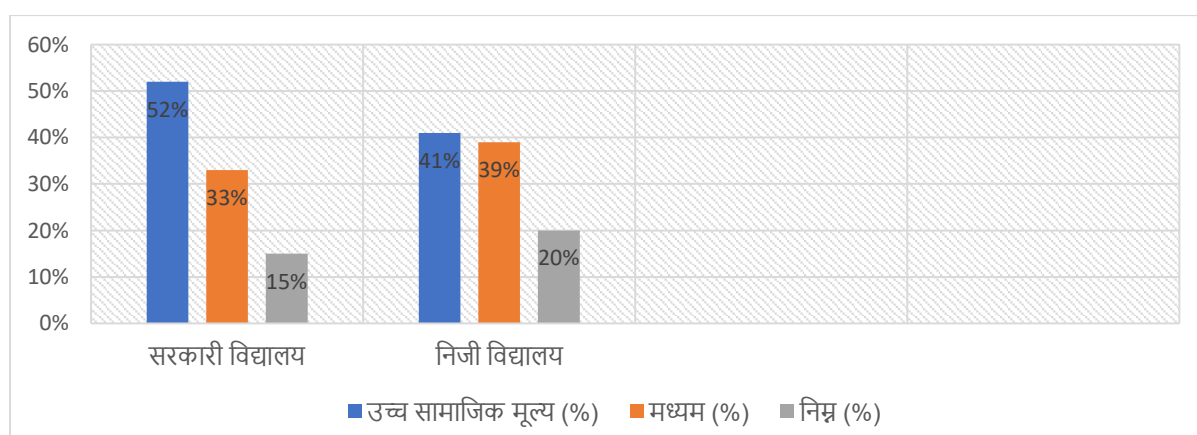


व्याख्या

तालिका से स्पष्ट है कि निजी विद्यालयों के 56: विद्यार्थी उच्च शैक्षिक उपलब्धि श्रेणी में आते हैं, जबकि सरकारी विद्यालयों में यह प्रतिशत 28% है। इससे यह सिद्ध होता है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि में अपेक्षाकृत आगे हैं।

तालिका 2 : सामाजिक मूल्यों का प्रतिशतात्मक स्तर

विद्यालय का प्रकार	उच्च सामाजिक मूल्य (%)	मध्यम (%)	निम्न (%)
सरकारी विद्यालय	52%	33%	15%
निजी विद्यालय	41%	39%	20%



व्याख्या

तालिका के अनुसार सरकारी विद्यालयों के 52% विद्यार्थियों में उच्च सामाजिक मूल्य पाए गए जबकि निजी विद्यालयों में यह प्रतिशत 41% है। इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक मूल्यों के विकास में सरकारी विद्यालय अधिक प्रभावी हैं।

तालिका3 : शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक सार

विद्यालय का प्रकार	शैक्षिक उपलब्धि	सामाजिक मूल्य
सरकारी विद्यालय	मध्यम	उच्च
निजी विद्यालय	उच्च	मध्यम

व्याख्या

इस तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी विद्यालय शैक्षिक उपलब्धि में आगे हैं, जबकि सरकारी विद्यालय सामाजिक मूल्यों के विकास में अधिक सक्षम हैं।

5 चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि विद्यालय का प्रकार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्यों को प्रभावित करता है। निजी विद्यालयों में बेहतर भौतिक संसाधन, अनुशासन एवं परीक्षा-केंद्रित शिक्षण प्रणाली होने के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। इसके विपरीत, सरकारी विद्यालयों में विविध सामाजिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं, जिससे उनमें सहयोग, सहिष्णुता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य अधिक विकसित होते हैं।

यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल उच्च अंक प्राप्त करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों का सामाजिक एवं नैतिक विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अतः दोनों प्रकार के विद्यालयों को एक-दूसरे की सकारात्मक विशेषताओं को अपनाने की आवश्यकता है।

6 निष्कर्ष

- अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि
- निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि में आगे हैं।
- सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हैं।
- शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्य दोनों ही विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं।
- अतः शिक्षा व्यवस्था में संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

7 सुझाव

- सरकारी विद्यालयों में शैक्षिक संसाधनों और शिक्षण-गुणवत्ता में सुधार किया जाए।
- निजी विद्यालयों में मूल्य-आधारित शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए।
- सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों द्वारा सामाजिक मूल्यों को विकसित किया जाए।
- शिक्षकों को नैतिक एवं सामाजिक शिक्षा के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाए।
- शिक्षा नीति में शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्यों दोनों को समान महत्व दिया जाए।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, देवकी नंदन. (2023). *सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों की भूमिका: एक तुलनात्मक अध्ययन*. Journal of Indian Education Studies. लिंक: <https://www.researchgate.net>
2. भास्कर, नितेश. (2024). *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का विकास: सरकारी एवं निजी विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन*. AIIR Journal. लिंक: <https://www.aiirjournal.com>
3. रहमान, एम. एच. (2021). *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मूल्य-जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन*. Amogh Varta Journal. लिंक: <https://www.amoghvarta.com>
4. मोहन, एस. (2023). *भारत में मूल्य शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा प्रणाली*. ResearchGate. लिंक: <https://www.researchgate.net/publication/376071658>
5. संखला, प्रकाश. (2022). *सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन*. International Journal of Education & Technical Research. लिंक: <https://www.gyanvihar.org/journals>
6. शर्मा, अजय कुमार. (2019). *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय प्रकार का प्रभाव*. Indian Journal of Educational Research. लिंक: <https://www.indianjournals.com>
7. गुप्ता, सीमा. (2018). *मूल्य शिक्षा और माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का सामाजिक विकास*. Educational Quest: An International Journal of Education. लिंक: <https://www.indianjournals.com>
8. यादव, रमेश चंद्र. (2017). *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन*. Journal of Educational Research. लिंक: <https://www.researchgate.net>
9. शर्मा, सुनीता एवं शर्मा, अजय कुमार. (2020). *सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन*. International Journal of Research in Social Sciences. लिंक: <https://www.ijrss.org>

- 10.** सिंह, मनोज कुमार. (2021). *विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों का संबंध*. Indian Journal of Educational Studies. लिंक: <https://www.researchgate.net>
- 11.** वर्मा, पूजा. (2019). *माध्यमिक स्तर पर सामाजिक मूल्यों एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन*. International Journal of Multidisciplinary Research. लिंक: <https://www.ijmr.net>
- 12.** कुमार, नीरज. (2020). *शिक्षा में सामाजिक मूल्यों की भूमिका: माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में*. Journal of Indian Education (NCERT). लिंक: <https://ncert.nic.in>
- 13.** रानी, कविता. (2018). *सरकारी एवं निजी विद्यालयों में मूल्य निर्माण की प्रक्रिया*. Educational Chronicle. लिंक: <https://www.researchgate.net>
- 14.** पांडेय, राजेश कुमार. (2022). *माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन*. International Journal of Advanced Education and Research. लिंक: <https://www.educationjournal.org>
- 15.** देवी, सुषमा. (2017). *मूल्य शिक्षा और किशोरों का सामाजिक विकास*. Indian Journal of Teacher Education. लिंक: <https://www.researchgate.net>
- 16.** मिश्रा, प्रियंका. (2022). *सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का अध्ययन*. शोधगंगा (पीएच.डी. शोध प्रबंध). लिंक: <https://shodhganga.inflibnet.ac.in>
- 17.** सिंह, अंजली. (2021). *विद्यालयी शिक्षा और सामाजिक मूल्य: एक तुलनात्मक अध्ययन*. शोधगंगा (एम.एड.). लिंक: <https://shodhganga.inflibnet.ac.in>
- 18.** जैन, अमित कुमार. (2019). *माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षिक उपलब्धि और सामाजिक मूल्य*. International Journal of Educational Development. लिंक: <https://www.researchgate.net>